खतरे में है समुद्री मछलियों का अस्तित्व

डॉ. महेश परिमल

यदि यह कहा जाए कि अगले 42 वर्षों में समुद्र की मछलियों का जीवन समाप्त हो जाएगा और समुद्र इन मछलियों के बिना एकदम सूना हो जाएगा, तो सहसा कोई विश्वास नहीं करेगा।

यह कोई कोरी कल्पना नहीं, वरन् एक व्यापक अध्ययन के बाद निकाला गया परिणाम है। यह समुद्री-इकोसिस्टम के साथ-साथ भोजन व जीविका के लिए समुद्री मछलियों पर निर्भर रहने वाले लोगों के लिए भी एक बुरी खबर है। जिस तेज़ी से इन जीवों की संख्या में घट रही है, इसे देखते हुए लगता है कि 2048 तक इनका अस्तित्व मिट जाएगा।

हमने समुद्र को जिस तरह से नुकसान पहुंचाया है, उसका खामियाज़ा भावी पीढ़ी को भुगतना होगा। धरती पर क्रांकीट के जंगल बोने वाला यह इंसान अब समुद्र में अपने होने का डंका बजाना चाहता है। इससे समुद्री जीवों के सामने जीवन जीना मुश्किल हो गया है।

समुद्री मछलियों के सम्बंध में किए गए इस व्यापक अध्ययन की विस्तृत रिपोर्ट *साइंस* पत्रिका में प्रकाशित की गई है। वैज्ञानिकों का मानना है कि इससे न केवल दुनिया में भोजन का एक प्रमुख स्रोत खत्म हो जाएगा, बल्कि इससे समुद्री इकोसिस्टम को भी भारी नुकसान पहुंचेगा। रिपोर्ट के मुताबिक लगभग एक तिहाई समुद्री मछलियां खत्म हो चुकी हैं और इनके खत्म होने की रफ्तार बढ़ रही है।

विशेषज्ञों का कहना है कि मछलियों का खत्म होना समुद्र के दूसरे जीवों के अस्तित्व से जुड़ा मामला है और पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय है। हां, सुरक्षित स्थानों में जो भी बचा हुआ है, उसे बचाए रखने की कोशिश की जा सकती है। कनाडा स्थित डलहौजी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर और इस अध्ययन के प्रमुख शोधकर्ता बोरिस वर्म का कहना है कि लोग जब समुद्री जीवों का इस्तेमाल भोजन के रूप में या अन्य कार्यों में करते हैं तब यह मान कर चलते हैं कि यदि कुछ प्रजातियां खत्म भी हो जाएं तो अन्य जीव रहेंगे जो समुद्री इकोसिस्टम को बनाए रखने में कामयाब होंगे, किंतु उनकी यह मान्यता गलत है। ऐसा नहीं होता है क्योंकि हर जीव का इसमें अपना विशिष्ट योगदान होता है। इसके अलावा अब समुद्री मछलियों की संख्या इतनी तेज़ी से कम हो रही है कि यदि अब नहीं संभले तो शायद इसे बचा पाना काफी मुश्किल हो जाएगा। उनका कहना है कि मछली पकड़ने में आई कमी के बावजूद करीब तीस फीसदी समुद्री मछलियां विलुप्त हो चुकी हैं।

इससे ज़ाहिर है कि इनके खत्म होने का सिलसिला तेज़ी से जारी है। इस पतन को समझने के लिए हमें किसी मॉडल की आवश्यकता नहीं है। ये सारे निष्कर्ष उपलब्ध सूचनाओं के आधार पर निकाले गए हैं। इस अध्ययन से जुड़े कैलिफोर्निया स्थित स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय के अन्य विज्ञानी स्टीव पैलंबी का तो यहां तक कहना है कि समुद्री जीवों को मैनेज करने के तरीके में यदि मौलिक बदलाव नहीं लाया गया तो हो सकता है कि यह सदी इन जीवों के लिए शायद आखिरी ही साबित हो।

इस अध्ययन में एक खास बात यह उभरी है कि मछली पकड़ने के लिए उन्नत नौका, जाल व तकनीकें मौजूद होने के बावजूद 1994 से 2003 के दौरान वैश्विक स्तर

पर फिशिंग में 13 फीसदी गिरावट दर्ज की गई। अध्ययन से जुड़े विशेषज्ञों का कहना है कि समुद्री मछलियों के विलुप्त होने से तटीय जैव विविधता और पानी की गुणवत्ता को नुकसान पहुंच सकता है। सच तो यह है कि समुद्री मछलियों का इस तरह खत्म होना धरती के लिए दूसरी सबसे बड़ी पर्यावरण चुनौती है। हालांकि उनका यह भी कहना है कि अभी इतनी देर भी नहीं हुई है कि इस समस्या का समाधान न किया जा सके। इसके लिए समुद्र में ऐसे सुरक्षित क्षेत्र विकसित करने की वकालत की जा रही है जहां मछली पकड़ने पर पूरी तरह से प्रतिबंध हो। समुद्री जीवों को बचाने के लिए विकसित 48 इलाकों का अध्ययन किया गया है।

समुद्रों से ही हमारी पृथ्वी का अस्तित्व है और बहुत हद तक इनके भविष्य पर ही हमारा बेहतर आज और कल निर्भर करता है। इसलिए सरकारों को इस दिशा में ध्यान देने की आवश्यकता है। इस बात पर विशेष ध्यान देना होगा कि जब मछलियों का प्रजनन काल आता है, तब मछुआरों को समुद्र में मछली मारने की इजाज़त न दी जाए। यदि ऐसा होता है, तो मछुआरों पर सख्ती की जाए। सरकार की यह सख्ती कई जीवों को न केवल बचा सकती है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम साबित हो सकती है। ***(स्रोत फीचर्स)***